नेक्टर का प्रभाव

उपलब्धियों एवं नवाचारों का प्रस्तुतीकरण

संपादकीय | मुख्य संपादक का संदेश

नेक्टर इम्पैक्ट का दूसरा संस्करण विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं नवाचार के उपयोग से पूर्वोत्तर भारत तथा उससे आगे समावेशी विकास को बढ़ावा देने की हमारी निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है, विशेष रूप से पूर्वोत्तर भारत तथा बाह्य क्षेत्रों में। पिछले तिमाही के दौरान, नेक्टर ने मधुमक्खी पालन, बाँस विकास, ड्रोन प्रौद्योगिकी, जैविक कृषि, खाद्य प्रसंस्करण तथा सतत आजीविका जैसे क्षेत्रों में प्रभावशाली पहलों के माध्यम से अपनी पहुँच का विस्तार किया है।

एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में “प्रौद्योगिकी और विज्ञान के माध्यम से जनजातीय भारत का रूपांतरण” विषय पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यक्रम उल्लेखनीय है, जो नई दिल्ली स्थित भारत मंडपम में संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम ने जनजातीय समुदायों को सशक्त बनाने तथा उनकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के साथ-साथ विज्ञान और नवाचार की भूमिका को रेखांकित किया। इस अवसर पर प्रस्तुत की गई पहलों ने सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रौद्योगिकी को एक उत्प्रेरक के रूप में उसके महत्व की पुनः पुष्टि की।

इस अवधि के दौरान रणनीतिक साझेदारियों, क्षमता निर्माण कार्यक्रमों, अवसंरचना विकास तथा समुदाय-केंद्रित पहलों के माध्यम से भी महत्वपूर्ण प्रगति दर्ज की गई। नई सुविधाओं एवं प्रयोगशालाओं के उद्घाटन से लेकर किसानों, उद्यमियों, शिल्पकारों, विद्यार्थियों तथा सरकारी अधिकारियों के लिए कौशल विकास कार्यक्रमों तक, नेक्टर नवाचार और अवसरों का एक सुदृढ़ पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करने के लिए निरंतर कार्यरत है।

हमारी उपलब्धियाँ हमारे साझेदारों, हितधारकों, लाभार्थियों तथा नेक्टर परिवार के समर्पित प्रयासों के माध्यम से संभव हुई हैं। हम सभी मिलकर सतत प्रभाव सृजित करने, स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को सुदृढ़ बनाने तथा प्रौद्योगिकी-सक्षम पूर्वोत्तर के निर्माण के लिए प्रतिबद्ध हैं।

आगे बढ़ते हुए, हम नए उत्साह के साथ विचारों को क्रियान्वित करने तथा नवाचार को अवसरों में परिवर्तित करने की दिशा में अग्रसर हैं।

—मुख्य संपादक
डॉ. अरुण कुमार शर्मा

प्रमुख लेख

विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डी. एस. टी.), भारत सरकार ने अपने सीड प्रभाग के माध्यम से, अमृत और स्वतंत्रता सेनानी लोकबंधु राम मूर्ति पावसे न्यास के सहयोग से, 12-13 अप्रैल 2026 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में "प्रौद्योगिकी और विज्ञान के माध्यम से आदिवासी भारत को बदलने" के लिए राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रम का आयोजन किया।

और पढ़ें ....

मुख्य बिंदु एवं पहलें

नोएडा हाट में 17–20 अप्रैल 2026 के दौरान क्रेता–विक्रेता सम्मेलन एवं शहद बाज़ार का आयोजन।

और पढ़ें ....

8 मई 2026 को अरुणाचल प्रदेश के राजीव गांधी विश्वविद्यालय में शहद परीक्षण प्रयोगशाला का उद्घाटन।

और पढ़ें ....

पीएम-डिवाइन के अंतर्गत पूर्वी सियांग सामान्य सुविधा केंद्र का उद्घाटन किया गया। और पढ़ें ...

डिब्रूगढ़ के चाय बागानों में ड्रोन द्वारा छिड़काव का सफल प्रदर्शन किया गया।

और पढ़ें...

नेक्टर हनी मिशन के अंतर्गत आरआरटीसी, उमरान में मधु संग्रहण एवं प्रसंस्करण केंद्र का उद्घाटन किया गया। और पढ़ें...

श्री गवाडे सचिन शंकर, आईएफएस, एमबीडीए के मिशन निदेशक ने नेक्टर-बीसीडीआई, अगरतला परिसर का दौरा कर कौशल विकास संबंधी पहलों की समीक्षा की।

प्रधानमंत्री डिवाइन ऑर्गेनिक परियोजना के अंतर्गत नेक्टर द्वारा पूर्वोत्तर क्षेत्र के 15,000 से अधिक जैविक किसानों का भू-स्थानिक डेटाबेस तैयार किया गया।

नेक्टर की टीम द्वारा मेघालय जैव विविधता बोर्ड परियोजना (चरण-II) के अंतर्गत पत्ती-स्तरीय स्पेक्ट्रा डेटा संग्रहण की निगरानी का कार्य किया

22 अप्रैल, 2026 को खाद्य प्रसंस्करण उपकरणों का प्रदर्शन कार्यशाला आयोजित की गई।
और पढ़ें...

17 जाट रेजिमेंट के सेना अधिकारियों के लिए 23 से 29 अप्रैल, 2026 तक ड्रोन प्रशिक्षण आयोजित किया गया।

एनआईटी मेघालय के विद्यार्थियों के लिए 2 मई, 2026 को ड्रोन जागरूकता कार्यशाला आयोजित की गई।

एनईएचयू (NEHU) के भूविज्ञान विभाग द्वारा नेक्टर के सहयोग से 4 से 15 मई, 2026 तक भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी पर कार्यशाला आयोजित की गई।
और पढ़ें...

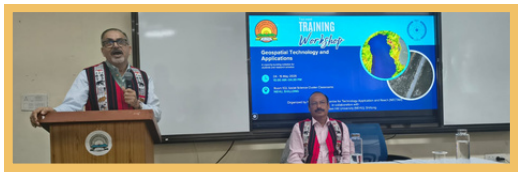

प्रधानमंत्री डिवाइन ऑर्गेनिक परियोजना के अंतर्गत किसानों के लिए सामुदायिक बीज बैंक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।
और पढ़ें ....

जिला रेशम पालन कार्यालय, गारो हिल्स के सहयोग से प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।
और पढ़ें ....

अशारीकांडी पॉटरी क्लस्टर के कारीगरों के लिए कौशल उन्नयन कार्यशाला एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।
और पढ़ें ....

टीएआरए (TARA) और नेक्टर द्वारा संयुक्त रूप से एलसी3 प्रौद्योगिकी के माध्यम से सीमेंट क्षेत्र के डीकार्बोनाइजेशन पर कार्यशाला आयोजित की गई। और पढ़ें ....

पीएमकेवीवाई 4.0 के अंतर्गत बोंगाईगांव में सेमीकंडक्टर प्रशिक्षण कार्यक्रम ने 1500 से अधिक अभ्यर्थियों के साथ गति पकड़ी।

पीएम विकास कार्यक्रम ने 1088 लाभार्थियों के साथ महत्वपूर्ण नामांकन उपलब्धि हासिल की।

नेक्टर ने एपीएससीएसएंडटी के विमानन जागरूकता कार्यक्रम में ड्रोन प्रौद्योगिकी का प्रदर्शन किया।

नेक्टर ड्रोन स्कूल से 102 डीजीसीए प्रमाणित पायलटों ने प्रशिक्षण पूर्ण कर उत्तीर्णता प्राप्त की।

साझेदारी की प्रमुख उपलब्धियाँ

नेक्टर ने विभिन्न समझौता ज्ञापनों के माध्यम से अपने संस्थागत सहयोग ढांचे का विस्तार किया, जिससे विभिन्न क्षेत्रों एवं राज्यों में कार्यान्वयन क्षमताओं को सुदृढ़ किया गया।

28.04.2026: नेक्टर और पुलुंग फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी, अरुणाचल प्रदेश के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

05.05.2026: नेक्टर और सेंट एडमंड्स कॉलेज, शिलांग के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

20.5.2026: ड्रोन प्रौद्योगिकी के संवर्धन हेतु नेक्टर और ड्रोन फेडरेशन इंडिया के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

27.05.2026: पूर्वोत्तर में मधुमक्खी पालन को सुदृढ़ करने हेतु इंडिया हनी एलायंस के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

29.05.2026: विज्ञान संचार केंद्र, नई दिल्ली के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

नेक्टर के प्रमुख क्षण

22.04.2026: हाइपरस्पेक्ट्रल डेटा के अनुप्रयोगों पर आयोजित ईएसआरआई जियो विज़न सेमिनार में नेक्टर का प्रतिनिधित्व किया गया।

22.04.2026: विश्व बैंक की टीम ने नेक्टर -बीसीडीआई, अगरतला का दौरा किया।

25-26.04.2026: नेक्टर के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी ने रमन रिसर्च इंस्टीट्यूट में डीएसटी द्वारा आयोजित द्वितीय वार्षिक प्रशासन प्रमुखों की बैठक में भाग लिया।

11.05.2026: नेक्टर ने छात्र सहभागिता कार्यक्रमों के साथ राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस 2026 मनाया। और पढ़ें ...

18.05.2026: महानिदेशक नेक्टर ने राष्ट्रीय कार्यशाला में कार्बन क्रेडिट संवर्धन हेतु पूर्वोत्तर क्षेत्र की संभावनाओं पर प्रकाश डाला।

और पढ़ें ...

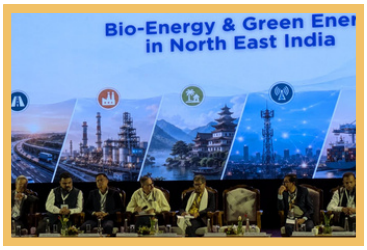

16.06.2026: महानिदेशक नेक्टर ने नॉर्थ ईस्ट इंडिया इंफ्रास्ट्रक्चर समिट एवं प्रदर्शनी 2026 में उत्तर-पूर्व भारत में जैव ऊर्जा एवं हरित ऊर्जा पर आयोजित सत्र की अध्यक्षता की।

17.06.2026: नेक्टर ने हिंदी के आधिकारिक उपयोग को बढ़ावा देने हेतु टिप्पणी एवं प्रारूप लेखन पर हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया।

19.06.2026: नेक्टर मुख्यालय में "स्वस्थ वृद्धावस्था के लिए योग" थीम के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया।

नेक्टर परिवार – उपलब्धियाँ

नेक्टर की हनी टीम ने चींटियों के हमले से मधुमक्खी कॉलोनी को सफलतापूर्वक सुरक्षित किया, जो वैज्ञानिक छत्ता प्रबंधन एवं मधुमक्खी पालन सहायता के क्षेत्र में उनकी बढ़ती विशेषज्ञता को दर्शाता है।

पूर्वोत्तर से साक्षात्कार

तेजपुर विश्वविद्यालय के प्रोफेसर अमरेन्द्र कुमार दास, प्रो-उपकुलपति, से विशेष संवाद

नेक्टर का प्रभाव के इस दूसरे संस्करण से हमें अत्यंत हर्ष है कि तेजपुर विश्वविद्यालय के प्रो-उपकुलपति प्रोफेसर अमरेन्द्र कुमार दास के साथ हुए विशेष संवाद प्रस्तुत कर रहे हैं। प्रोफेसर दास एक प्रतिष्ठित शिक्षाविद् एवं नवाचार विशेषज्ञ हैं, जिन्होंने पूर्वोत्तर क्षेत्र में अनुसंधान, उद्यमिता तथा सतत विकास को नई दिशा देने में उल्लेखनीय योगदान दिया है।

1. कृपया अपनी शैक्षणिक एवं व्यावसायिक यात्रा के बारे में संक्षेप में बताइए।

उत्तर: मैंने अपनी शैक्षणिक यात्रा की शुरुआत अन्ना विश्वविद्यालय से वस्त्र प्रौद्योगिकी में स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के साथ की। इसके पश्चात उद्योग क्षेत्र में कार्य किया और बाद में शिक्षण क्षेत्र से जुड़ गया। सामाजिक क्षेत्र में नवाचार के प्रति मेरी रुचि ने मुझे एमबीए, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) बॉम्बे से मास्टर ऑफ डिज़ाइन तथा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) गुवाहाटी से पीएच.डी. करने के लिए प्रेरित किया। वर्षों के दौरान मेरा मुख्य ध्यान समुदाय विकास हेतु प्रौद्योगिकी-संचालित समाधानों पर रहा है, जिनमें 'दीपबाहन' त्रिचक्र रिक्शा परियोजना विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

2. तेजपुर विश्वविद्यालय के लिए आपकी प्रमुख प्राथमिकताएँ और दृष्टिकोण क्या हैं?

उत्तर: मेरी प्राथमिकता शैक्षणिक उत्कृष्टता, गुणवत्तापूर्ण अनुसंधान, नवाचार तथा वित्तीय आत्मनिर्भरता को सुदृढ़ करना है। मेरा उद्देश्य तेजपुर विश्वविद्यालय को एक अग्रणी अनुसंधान-केंद्रित संस्थान के रूप में विकसित करना है, जो अंतर्विषयक अनुसंधान, प्रौद्योगिकी के व्यावसायीकरण, उद्यमिता तथा कौशल विकास के माध्यम से राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत करे। इस दिशा में अनुसंधान पार्क की स्थापना तथा कृषि, उद्यानिकी, खाद्य प्रसंस्करण एवं निर्माण प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में प्रशिक्षण सुविधाओं के विस्तार की योजनाएँ प्रगति पर हैं।

3. पूर्वोत्तर क्षेत्र के विकास में विश्वविद्यालय किस प्रकार योगदान दे सकते हैं?

उत्तर: विश्वविद्यालयों को अपनी शिक्षा एवं अनुसंधान गतिविधियों को क्षेत्रीय आवश्यकताओं के अनुरूप बनाना चाहिए। पूर्वोत्तर क्षेत्र जैव विविधता, औषधीय पौधों, ऑर्किड, सतत कृषि, आपदा प्रबंधन, खाद्य प्रसंस्करण तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण जैसे क्षेत्रों में अपार संभावनाओं से समृद्ध है। शैक्षणिक संस्थानों को नवाचार, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, उद्यमिता तथा समुदाय-आधारित कौशल विकास को प्रोत्साहित कर सामाजिक एवं आर्थिक विकास में सार्थक योगदान देना चाहिए।

4. क्षेत्रीय विकास में प्रौद्योगिकी, नवाचार एवं स्वदेशी ज्ञान की क्या भूमिका हो सकती है?

उत्तर: परिशुद्ध कृषि, ड्रोन, जल प्रबंधन प्रणालियाँ तथा नवीकरणीय ऊर्जा जैसी प्रौद्योगिकी-आधारित पहलें उत्पादकता बढ़ाने तथा जलवायु परिवर्तन के प्रति अनुकूलन क्षमता विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। इसके साथ ही स्वदेशी ज्ञान का संरक्षण तथा उसका वैज्ञानिक प्रमाणीकरण भी अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि यह स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप टिकाऊ एवं व्यावहारिक समाधान प्रदान करता है। पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान का समन्वय क्षेत्रीय विकास के प्रभावी मॉडल प्रस्तुत कर सकता है।

5. नेक्टर जैसे संगठनों के साथ सहयोग को आप किस दृष्टि से देखते हैं?

उत्तर: नेक्टर प्रयोगशाला में विकसित अनुसंधान एवं उसके क्षेत्रीय क्रियान्वयन के बीच एक महत्वपूर्ण सेतु की भूमिका निभाता है। जहाँ विश्वविद्यालय ज्ञान एवं नई प्रौद्योगिकियों का सृजन करते हैं, वहीं नेक्टर जैसी संस्थाएँ इन नवाचारों को व्यवहारिक समाधानों में परिवर्तित कर व्यापक स्तर पर समाज तक पहुँचाने का कार्य करती हैं। क्षेत्र के तीव्र एवं समावेशी विकास के लिए ऐसे सहयोग अत्यंत आवश्यक हैं।

6. उद्यमिता एवं कौशल विकास को बढ़ावा देने के लिए कौन-कौन से कदम उठाए जा रहे हैं?

उत्तर: तेजपुर विश्वविद्यालय स्टार्टअप संवर्धन, ग्राम-आधारित उद्यमिता, बाँस एवं खाद्य प्रसंस्करण आधारित उद्योगों तथा उद्योग-संबद्ध कौशल विकास कार्यक्रमों को सक्रिय रूप से प्रोत्साहित कर रहा है। इसके अतिरिक्त, सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी, विदेशी भाषाओं के अध्ययन तथा नवाचार-आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रमों का भी विस्तार किया जा रहा है, ताकि युवाओं के लिए रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसरों में वृद्धि हो सके।

7. पूर्वोत्तर क्षेत्र के युवाओं के लिए आपका क्या संदेश है?

उत्तर: पूर्वोत्तर भारत प्रकृति की अनुपम देन है। ऐतिहासिक रूप से यह क्षेत्र अनेक दृष्टियों से आत्मनिर्भर रहा है। किंतु वर्तमान में बढ़ते शहरीकरण के कारण यहाँ के युवाओं में सरकारी नौकरियों के प्रति आकर्षण बढ़ा है। इस सोच में परिवर्तन की आवश्यकता है। युवाओं को ग्रामीण उद्यमिता, पर्यटन, आतिथ्य (हॉस्पिटैलिटी) तथा स्वास्थ्य सेवाओं जैसे क्षेत्रों में स्वरोजगार के अवसर तलाशने चाहिए। विशेष रूप से नर्सिंग क्षेत्र में पूर्वोत्तर भारत की मानव संसाधन क्षमता पूरे देश में प्रतिष्ठित है और इसमें व्यापक संभावनाएँ उपलब्ध हैं।

8. भविष्य निर्माण में अकादमिक जगत की क्या भूमिका होनी चाहिए?

उत्तर: अकादमिक जगत को परिवर्तन का उत्प्रेरक बनकर ज्ञान सृजन, साक्ष्य-आधारित नीति निर्माण तथा समाज को उभरती चुनौतियों के लिए तैयार करने की दिशा में कार्य करना चाहिए। विश्वविद्यालयों को नवाचार, अनुसंधान एवं सामाजिक परिवर्तन के प्रमुख केंद्र के रूप में कार्य करते हुए समावेशी एवं सतत विकास को गति प्रदान करनी चाहिए।

इस संस्करण के माध्यम से हम प्रोफेसर ए. के. दास के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करते हैं, जिन्होंने समय निकालकर अपने विचार, अनुभव एवं दूरदर्शी दृष्टिकोण हमारे साथ साझा किए। उनके प्रेरणादायी विचार पूर्वोत्तर भारत के नवाचारकर्ताओं, उद्यमियों तथा भावी परिवर्तनकर्ताओं की नई पीढ़ी को समाज एवं राष्ट्र के विकास में सक्रिय योगदान देने के लिए प्रेरित करेंगे।